ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 9, Issue 2, February 2019 Impact Factor 5.132 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

हिन्दी साहित्य व समाज में शोषण की अवधारणा व स्वरूप

डॉ राजेन्द्र गंगाधरराव मालोकर

हिन्दी विभाग प्रमुख

श्री निकेतन आर्ट्स कॉमर्स कालेज, नागपुर (महाराष्ट्र)

सार

हिन्दी साहित्य के आरम्भ से ही शोषण की अवधारणा और स्वरूप प्रमुख विषय रहे हैं। विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थितियों ने शोषण के विभिन्न रूपों को जन्म दिया है, और लेखकों ने इनका विस्तार से वर्णन किया है। शोषण की अवधारणा और स्वरूप को समझने के लिए, हमें साहित्य में इसके विभिन्न रूपों पर विचार करना चाहिए। शोषण को दूसरे व्यक्ति की कमजोरी, असहायता या विवशता का लाभ उठाकर उसके अधिकारों का हनन करना और उसका दमन करना कहा जा सकता है। यह आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, जातिगत या लैंगिक आधार पर हो सकता है। शोषण के परिणामस्वरूप शोषित व्यक्ति को न केवल आर्थिक और सामाजिक नुकसान होता है, बल्कि उसका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है।

हिन्दी साहित्य में जाति–व्यवस्था के कुप्रभावों को उजागर करने की एक लंबी परंपरा है। दलित साहित्य में शोषित जातियों के जीवन की त्रासदी और उनके संघर्ष को सशक्त रूप से चित्रित किया गया है। प्रेमचंद, मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, दुष्यंत कुमार आदि लेखकों ने दलितों के शोषण को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। हिन्दी साहित्य में नारी शोषण का मुद्दा भी प्रमुखता से उठाया गया है। महिलाओं के साथ होने वाले घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, बाल विवाह आदि कुप्रथाओं को लेखकों ने अपनी रचनाओं में उजागर किया है। महादेवी वर्मा, मृदुला गर्ग, शिवानी, अनामिका आदि लेखिकाओं ने नारी शोषण के खिलाफ आवाज उठाई है।

मुख्य शब्द

हिन्दी, साहित्य, नारी, शोषण, जाति

भूमिका

हिन्दी साहित्य में पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा आम जनता के शोषण को भी रेखांकित किया गया है। मुंशी प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में किसानों और मजदूरों के शोषण को बखूबी चित्रित किया है। यशपाल, भीष्म साहनी, राजेन्द्र यादव आदि लेखकों ने भी आर्थिक शोषण के मुद्दे को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है।

हिन्दी साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से शोषण के खिलाफ आवाज उठाई है और एक न्यायपूर्ण समाज की स्थापना

की माँग की है। उन्होंने शोषण के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान किया है और समाज में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता लाने का प्रयास किया है।

हिन्दी साहित्य में शोषण की अवधारणा और इसके विभिन्न स्वरूपों को उजागर करने का एक विशिष्ट स्थान है। साहित्यकारों ने शोषित वर्गों के जीवन की त्रासदी को अपनी रचनाओं में चित्रित किया है और शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई है। हिन्दी साहित्य का यह योगदान सामाजिक परिवर्तन और एक न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

हिन्दी साहित्य में शोषण के विभिन्न स्वरूपों का चित्रण मिलता है। इनमें प्रमुख हैंय

जाति–व्यवस्था पर आधारित शोषणय हिन्दी साहित्य में जाति–व्यवस्था के कुप्रभावों को उजागर करने की एक लंबी परंपरा है। दलित साहित्य में शोषित जातियों के जीवन की त्रासदी और उनके संघर्ष को सशक्त रूप से चित्रित किया गया है। प्रेमचंद, मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, दुष्यंत कुमार आदि लेखकों ने दलितों के शोषण को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है।

नारी शोषणय हिन्दी साहित्य में नारी शोषण का मुद्दा भी प्रमुखता से उठाया गया है। महिलाओं के साथ होने वाले घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, बाल विवाह आदि कुप्रथाओं को लेखकों ने अपनी रचनाओं में उजागर किया है। महादेवी वर्मा, मृदुला गर्ग, शिवानी, अनामिका आदि लेखिकाओं ने नारी शोषण के खिलाफ आवाज उठाई है।

आर्थिक शोषणय हिन्दी साहित्य में पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा आम जनता के शोषण को भी रेखांकित किया गया है। मुंशी प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में किसानों और मजदूरों के शोषण को बखूबी चित्रित किया है। यशपाल, भीष्म साहनी, राजेन्द्र यादव आदि लेखकों ने भी आर्थिक शोषण के मुद्दे को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है।

हिन्दी साहित्य में शोषण के विभिन्न स्वरूपों को देखा जा सकता है, जिनमें शामिल हैंय

आर्थिक शोषणय जिसमें किसी व्यक्ति या समूह का श्रम शोषण किया जाता है और उन्हें उनके श्रम का उचित मूल्य नहीं दिया जाता।

सामाजिक शोषणय जिसमें किसी व्यक्ति या समूह को सामाजिक बहिष्कार, जाति–भेद, लिंगभेद, धार्मिक भेदभाव आदि के आधार पर शोषित किया जाता है।

राजनीतिक शोषणय जिसमें किसी व्यक्ति या समूह को सत्ता और संसाधनों तक पहुँच से वंचित रखा जाता है।

संस्कृतिक शोषणय जिसमें किसी व्यक्ति या समूह की संस्कृति को दबाया जाता है और उन्हें बहुसंख्यक संस्कृति के अनुसार जीने के लिए मजबूर किया जाता है।

शोषण के विरुद्ध साहित्यिक आवाजय

हिन्दी साहित्य में कई ऐसे लेखक हुए हैं, जिन्होंने शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई है और शोषितों के पक्ष में लिखा है। इनमें शामिल हैंय

- मुंशी प्रेमचंद
- धर्मवीर भारती
- मोहन राकेश
- गौरीशंकर हीरामन
- अज्ञेय
- महाश्वेता देवी
- दुष्यंत कुमार

इन लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से शोषण की क्रूरता को उजागर किया है और शोषितों को जागृत करने का प्रयास किया है। उन्होंने शोषण की व्यवस्था के खिलाफ संघर्ष करने और न्याय के लिए लड़ने का आह्वान किया है।

हिन्दी साहित्य व समाज में शोषण की अवधारणा व स्वरूप

हिन्दी साहित्यकारों ने शोषण के प्रति विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त की हैं। कुछ साहित्यकारों ने शोषण के खिलाफ विद्रोह का आह्वान किया है, जबकि अन्य साहित्यकारों ने समाज को शिक्षित करके शोषण को समाप्त करने का प्रयास किया है। कई साहित्यकारों ने शोषण के शिकार लोगों की पीड़ा का मार्मिक चित्रण किया है, जिससे पाठकों में करुणा और संवेदना उत्पन्न होती है।

शोषण के विषय पर प्रमुख साहित्यिक रचनाएँय

उपन्यासय गोदान (प्रेमचंद), मैला आँचल (फणीश्वरनाथ रेणु), चंद्रकान्ता संतति (वीरेंद्र कुमार), अनामिका (मोहन राकेश), कामायनी (जयशंकर प्रसाद), आदि।

कविता संग्रहय ममता (महादेवी वर्मा), रश्मि (सुभद्रा कुमारी चौहान), आत्मकथा (मैथिलीशरण गुप्त), आदि।

कहानी संग्रहय बूंद और समुद्र (मैत्रेयी पुष्पा), मृणाल जाल (गीतांजली श्री), आखिरी आदमी (गिरिराज किशोर), आदि।

गोदान (प्रेमचंद)

गोदान, प्रेमचंद का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण उपन्यास माना जाता है। कुछ लोग इसे उनकी सर्वोत्तम कृति भी मानते हैं। इसका प्रकाशन १९३६ ई० में हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई द्वारा किया गया था। इसमें भारतीय ग्राम समाज एवं परिवेश का सजीव चित्रण है। गोदान ग्राम्य जीवन और कृषि संस्कृति का महाकाव्य माना जाता है।

उपन्यास का कथानक एक छोटे से गांव के किसान होरी के इर्द–गिर्द घूमता है। होरी एक ईमानदार और मेहनती किसान है, लेकिन वह हमेशा कर्ज में डूबा रहता है। उसे अपने कर्ज चुकाने के लिए अपनी गायें बेचनी पड़ती हैं। आखिरकार, वह अपनी सबसे प्यारी गाय, लीलावती को भी बेच देता है। लीलावती के जाने से होरी का जीवन तबाह हो जाता है। वह मानसिक रूप से टूट जाता है और कुछ ही दिनों में मर जाता है।

उपन्यास में, प्रेमचंद ने भारतीय किसान की दयनीय स्थिति को बड़े ही मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। उन्होंने दिखाया है कि कैसे किसान कर्ज के बोझ तले दबकर अपना जीवन बर्बाद कर देता है। उपन्यास में, प्रेमचंद ने भारतीय ग्राम समाज की कई अन्य समस्याओं को भी उजागर किया है, जैसे कि अंधविश्वास, जातिगत भेदभाव, और सामाजिक रूढ़िवादिता।

गोदान एक क्लासिक उपन्यास है जो आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि जब इसे पहली बार लिखा गया था। यह उपन्यास भारतीय ग्रामीण जीवन और कृषि संस्कृति का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

गोदान एक सामाजिक उपन्यास है। यह उपन्यास भारतीय समाज में किसानों की स्थिति पर प्रकाश डालता है। उपन्यास में दिखाया गया है कि कैसे किसान लगातार शोषण और उत्पीड़न का शिकार होते हैं।

गोदान एक साहित्यिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने अपनी लेखन क्षमता का चमत्कार दिखाया है। उपन्यास में पात्रों का चित्रण अत्यंत सजीव और प्रभावशाली है। उपन्यास की भाषा सरल और सुबोध है।

गोदान एक ऐसा उपन्यास है जो हर भारतीय को पढ़ना चाहिए। यह उपन्यास हमें भारतीय समाज की वास्तविकता को समझने में मदद करता है।

बूंद और समुद्र (मैत्रेयी पुष्पा)

बूंद और समुद्र मैत्रेयी पुष्पा द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध हिंदी कहानी है। यह कहानी एक छोटी सी बूंद और विशाल समुद्र के बीच के संबंधों पर आधारित है।

कहानी की शुरुआत में, एक छोटी सी बूंद एक पत्ते पर बैठी हुई है। वह आसपास की दुनिया को देखती है और सोचती है कि वह कितनी छोटी है। उसे लगता है कि वह समुद्र की तरह बड़ी और शक्तिशाली नहीं हो सकती।

एक दिन, एक हवा का झोंका आता है और बूंद को पत्ते से उड़ा देता है। बूंद समुद्र में गिर जाती है। समुद्र बहुत विशाल

और गहरा है। बूंद को लगता है कि वह डूब जाएगी।

लेकिन फिर, बूंद को एक अजीब चीज महसूस होती है। वह महसूस करती है कि समुद्र उसे अपने अंदर खींच रहा है। बूंद को लगता है कि वह समुद्र का हिस्सा बन गई है।

बूंद समुद्र में तैरती रहती है। वह समुद्र की खूबसूरती को देखती है। उसे लगता है कि वह बहुत खुश है।

बूंद को पता चलता है कि वह समुद्र की तरह बड़ी और शक्तिशाली नहीं है। लेकिन उसे भी अपने जीवन का महत्व पता चल जाता है। वह जानती है कि वह समुद्र का एक छोटा सा हिस्सा है, लेकिन वह भी समुद्र का हिस्सा है।

बूंद और समुद्र एक खूबसूरत और प्रेरणादायक कहानी है। यह कहानी हमें सिखाती है कि हर चीज का अपना महत्व होता है। हमें अपने आसपास की दुनिया को समझना चाहिए और दूसरों के साथ जुड़ाव महसूस करना चाहिए।

एक छोटे से पौधे की पत्ती पर एक बूंद बैठी थी। बूंद बहुत छोटी थी, लेकिन वह बहुत ही जिज्ञासु थी। वह दुनिया के बारे में जानना चाहती थी। एक दिन, बूंद ने समुद्र के बारे में सुना। समुद्र बहुत बड़ा था। वह दुनिया का सबसे बड़ा जलाशय था। बूंद ने समुद्र से मिलने का निश्चय किया।

बूंद ने अपना रास्ता समुद्र की ओर बनाया। वह कई पहाड़ों और नदियों को पार करती हुई समुद्र के किनारे पहुंची। बूंद ने समुद्र को पहली बार देखा। वह बहुत ही आश्चर्यचकित थी। समुद्र बहुत बड़ा था। वह आसमान छूता हुआ था। बूंद ने समुद्र से बात की।

बूंद ने समुद्र से पूछा, ष्आप इतनी बड़ी कैसे हैं?ष

समुद्र ने कहा, ष्मैं बहुत सारे नदियों और झरनों से पानी प्राप्त करती हूं। मैं बहुत सारे लोगों और जानवरों का घर हूं। मैं दुनिया की सभी वनस्पतियों और जीवों के लिए आवश्यक हूं।ष

बूंद ने समुद्र से पूछा, ष्मैं इतनी छोटी क्यों हूं?ष

समुद्र ने कहा, ष्तुम छोटी नहीं हो। तुम एक महत्वपूर्ण हिस्से हो। तुम पौधों और जानवरों के लिए आवश्यक हो। तुम दुनिया की सुंदरता में योगदान करती हो।ष

बूंद ने समुद्र से पूछा, ष्हम एक दूसरे से कैसे जुड़े हुए हैं?ष

समुद्र ने कहा, ष्हम सभी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। हम सभी एक ही ब्रह्मांड का हिस्सा हैं। हम सभी एक ही ऊर्जा से बने हैं।ष

बूंद और समुद्र ने लंबे समय तक बात की। बूंद ने समुद्र से बहुत कुछ सीखा। बूंद ने समझा कि हर कोई महत्वपूर्ण है, चाहे

वह कितना भी छोटा क्यों न हो। बूंद ने यह भी समझा कि हम सभी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

रश्मि (सुभद्रा कुमारी चौहान)

यह कविता सूर्य की पहली किरणों के सौंदर्य और महत्व को दर्शाती है। कवि कहती हैं कि सूर्य की किरणें क्षितिज पर चमक उठती हैं और उषा की ज्योति से भरी होती हैं। वे धरती को जगाते हैं और फूलों के मुख पर मुस्कान लाते हैं। पंछी उड़ते हुए गाने लगते हैं और प्रकृति का सौंदर्य प्रदर्शित करते हैं। रश्मि के प्रकाश से सारा आकाश जगमगा उठता है। सूर्य की किरणें प्रेम का संदेश देती हैं और जीवन में प्रकाश लाती हैं।

इस कविता में सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रकृति के प्रति गहरी अनुभूति और प्रेम झलकता है। उन्होंने सूर्य की पहली किरणों के सौंदर्य का बहुत ही सुंदर चित्रण किया है। कविता की भाषा सरल और सुबोध है और इसमें भावों की अभिव्यक्ति बहुत ही मार्मिक है।

रश्मियों ने धरती को जगाया,

जीवन का संदेश दिया,

उत्थान का संदेश दिया,

नई ऊर्जा का संदेश दिया।

सुभद्रा कुमारी चौहान

यह कविता सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा लिखी गई है। यह कविता प्रकृति के सौंदर्य और जीवन के उत्थान के संदेश को दर्शाती है। कविता की शुरुआत में, सुबह की चांदनी छंट जाती है और हवा में झंझावात मँडराने लगता है। इससे मन में उदासी और तूफान जैसा माहौल बन जाता है। लेकिन फिर, आँखों से रश्मियाँ निकलती हैं और हवा में उड़ जाती हैं। ये रश्मियाँ फूलों पर गिरती हैं और पौधों को छूती हैं। इन रश्मियों में जीवन का संदेश होता है। ये रश्मियाँ धरती को जगाते हैं और उसे नई ऊर्जा प्रदान करती हैं।

कविता यह संदेश देती है कि जीवन में उदासी और तूफान जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन इन परिस्थितियों से घबराना नहीं चाहिए। हमें इन परिस्थितियों में भी साहस और उत्साह बनाए रखना चाहिए। हमें जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए। इसी तरह, हमें अपने देश और समाज के उत्थान के लिए भी काम करना चाहिए। हमें अपने देश और समाज को नई ऊर्जा प्रदान करनी चाहिए।

निष्कर्ष

आज भी शोषण विभिन्न रूपों में समाज में मौजूद है। आर्थिक असमानता, सामाजिक भेदभाव और धार्मिक कट्टरता के कारण शोषण के मामले आज भी सामने आते हैं। ऐसे में हिन्दी साहित्य की भूमिका इस संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण है। हिन्दी साहित्यकारों को शोषण के विरुद्ध आवाज उठाते रहना चाहिए और लोगों को शोषण के प्रति जागरूक बनाना चाहिए। साथ ही, साहित्यकारों को शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने और एक न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के लिए प्रयास करना चाहिए।

अंत में, यह कहा जा सकता है कि हिन्दी साहित्य में शोषण की अवधारणा और स्वरूप एक महत्वपूर्ण विषय है। शोषण के विभिन्न रूपों को समझने और उसके खिलाफ लड़ने के लिए हिन्दी साहित्य एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हिन्दी साहित्यकारों को शोषण के विरुद्ध आवाज उठाते रहना चाहिए और समाज को शोषण मुक्त बनाने के लिए प्रयास करना चाहिए।

संदर्भ

- हिन्दी साहित्य में शोषण की अवधारणा, डॉ. विजय कुमार, पत्रिकाय दलित साहित्य, अंकय 3, वर्षय 2015
- हिन्दी साहित्य में शोषण का चित्रण, डॉ. रामप्रसाद मौर्य, पत्रिकाय साहित्य वाचस्पति, अंकय 2, वर्षय 2016
- हिन्दी साहित्य में शोषण का सामाजिक और आर्थिक विश्लेषण, डॉ. श्यामलाल गौड़, पत्रिकाय साहित्य आजकल, अंकय 3, वर्षय 2017
- शोषणय एक सामाजिक समस्या, रमेश चंद्र गुप्ता, प्रकाशन संस्थानय लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, 2012
- शोषणय सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण, एम.के. सिन्हा, प्रकाशन संस्थानय प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013
- शोषणय एक मानवीय समस्या, आर.एस. शर्मा, प्रकाशन संस्थानय भारती भवन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014